स्त्री विमर्श : हिंदी साहित्य में माहिलाओं का चित्रण

डॉ.वैशाली प्रशांत सामंत यशवंतराव चव्हाण (के.एम.सी.)महाविद्यालय,कोल्हापुर

प्रस्तावना

प्रकृति का सर्वश्रेष्ठ वरदान मानव ही है। मानव के प्रमुख दो भेद- पुरुष और नारी माने गये है। साहित्यके विभिन्न रूपों कविता, कहानी, नाटक और उपन्यास आदि में नारी विमर्श का चित्रण साहित्यकारों ने बड़ी कुशलता से किया है|

1.नारी- विमर्श स्वरूप:

नारी का अंतरंग और बहिरंग स्वरूप अत्यंत उलझा हुआ है। आधुनिक युग के नारी के व्यक्तित्व की पहचान करना बहुत ही दुष्कर काम है। क्योंकि घर और बाहर के बोझ को उठाते - उठाते वह मानो दो पाटो के बीच पीस रही है। नारी को परिभाषित करने का प्रयास कुछ विद्वानों ने किया है | ब्रहतदारण्यकोपनिषद" में सृष्टि की संपूर्ण रिक्तता की पूर्ति स्त्री से मानी गई है| नारी का सही मायने में और पूर्ण चित्रण करना ही स्त्री-विमर्श है। अतः हिंदी साहित्यकारों ने इसमें बहुत बड़ा योगदान दिया है। नारी-विमर्श पर विद्वजनों और साहित्यकारो ने खूब लिखा है, इस पर प्रकाश डाला है, परंतु आज भी उसेअपने व्यक्तित्व को विकसित करने के लिए खूब संघर्ष करना पड़ता है।

विभिन्न युगों में नारी की स्थिति :-

प्रागैतिहासिक काल से आधुनिक काल तक नारी स्तिथि में निरंतर कुछ न कुछ परिवर्तन होता आया है। नारी विमर्श के लिए इसकी जानकारी आवश्यक है |

प्रागैतिहसिक युग की नारी : नर से श्रेष्ठ नारीः-

प्रागैतिहासिक युग का इतिहास पुरातत्व अन्वेपण पर आधारित है। कुछ विद्‌वानों के अनुसार तत्कालीन समाज में विवाह पद्धति नहीं थी। नारी पुरुष छोटे-छोटे समुहो में रहते हुए प्रकृति से संघर्ष करते थे।

वैदिक युग की नारी : पूज्य एवं सन्माननीय :-

वैदिक युग का सबसे प्राचीन ग्रंथ ‘ऋग्वेद’ माना गया है। अतः ऋग्वेद के आधारपर तत्कालीन नारी स्थिति का बोध प्राप्त होता है।

महाकाव्य युग की नारी:- (महाकाव्यों में चित्रित नारी)

महाकाव्य काल में नारी अधिकार सीमित हो गये। उसकी स्वतंत्र सत्ता का लोप हो गया। ‘नारी’ पुरुष की संपत्ति मानी जाने लगी

मध्य युग की नारी- भोग्या नारी:-

मध्ययुग में मुसलमानों के आक्रमणों और मुगलों के राज्य के बाद नारी की स्तिथि में गिरावट आ गयी|

आधुनिक युग की नारी स्वः विकास की ओर उन्मुख :-

सदियों से उपेक्षित शोषित, पीड़ित बनी नारी की स्थिति पर भारतीय लोगों ने चिंतन किया और उसकी दीन-हीन स्थिति ने उसे बाहर निकालने का प्रयास शाहू, फुले, आंबेडकर, सत्यशोधक समाज, ब्राम्होसमाज, आर्य समाज 'दयानंद सरस्वती' ने शुरू किया। राजाराममोहन राय जैसे समाज सुधारकों ने सतीप्रथा ,दहेज़ प्रथा जैसी अन्यायपूर्ण प्रथा के विरोध में आवाज उठायी|

उत्तर आधुनिक युग की नारी:-

उत्तर आधुनिक युग में नारी शिक्षा नारी जागरण, वैज्ञानिक अविष्कार संविधान प्राप्त अधिकार, समकालीन राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक, धार्मिक, साँस्कृतिक स्थिति, पाश्चात्य विचार धाराएँ पाश्चात्य संस्कृति, आदि के कारण नारी जीवन में बहुत परिवर्तन होने लगा है। अस्तित्ववाद, मनोविश्लेषण आदि धाराएँ।

हिंदी साहित्य में स्त्री-विमर्श:-

हिंदी साहित्य की हर विधा स्त्री-विमर्श के बिना अधूरी है। प्रागैतिहासिक काल से लेकर उत्तर-आधुनिक काल तक के नारी का चित्रण हिंदी साहित्य में मिलता है।

हिंदी उपन्यासों में स्त्री-विमर्श:-

आज स्त्री को अपनी समग्रता में सभी स्तरों और आयामों में व्यापकता और गहनता के दोनों क्षेत्रों में अभिव्यक्त करने के लिए उपन्यास से अधिक समर्थ माध्यम दूसरा नहीं है। उपन्यास में स्त्री- व्यक्तित्व की सूक्ष्म से सूक्ष्म छटा प्राप्त होती है।

सन 1870 से 1976 के करीब सौ वर्ष के कालखंड में हिंदी उपन्यास में अभूतपूर्व प्रगति की है। प्रेमचंदजी के उपन्यासों में तत्कालीन ग्रामीण तथा नागर समाज का विराट चित्रण तथा युगीन समस्याओं का यथार्थ रूप प्राप्त होता है। प्रेमचंदजी की इस परंपरा को आगे विकसित करने वाले कई उपन्यासकार आ गये। उपन्यास साहित्य प्रेमचंद युग में युवा होकर अब प्रौढता के शिखरों को नाप रहा है। निःसंदेह उनकी उपलब्धियाँ महान और बेजोड है। प्रेमचंदजी ने उपन्यास के अंतःबाह्य धरातल को कल्पना के अस्वाभाविक एवं चौडे क्षितिज से उतारकर जीवन के यथार्थ धरातलपर उसे प्रतिष्ठापित किया। प्रेमचंद सामाजिक मानवीयता के महत्तम गुणों के गायक थे। इसी कारण सामान्य से सामान्य स्तर का पाठक भी एक शब्द में उन्हे सामाजिक उपन्यासकार ही कहता है।

प्रेमचंदोत्तर युग में वृंदावनलाल वर्मा, चतुरसेन शास्त्री, पांडेय बेचन शर्मा 'उग्र', भगवती प्रसाद वाजपेयी, जैनेंद्र कुमार, अज्ञेय, यशपाल, उपेंद्रनाथ अश्क, भगवती चरण वर्मा, अमृतलाल नागर आदि अनेक समाजवादी उपन्यासकार हुए जिन्होने हिंदी साहित्य को अनेक मौलिक उपन्यास दिए।

मंजूल भगत के उपन्यासों में स्त्री-विमर्श्

मंजूल भगत आधुनिक काल की एक सशक्त लेखिका मानी जाती है। उन्होंने अनेक प्रकार की साहित्यिक विधाओं में लेखन किया है। अपने तीस वर्ष की लेखन यात्रा में उन्होने अनेक पडाव पार करते हुए जीवन के यथार्थ को प्रस्तुत किया है। उन्होंने कुल ग्यारह कहानी संग्रह तथा सात उपन्यास लिखे हैं। मंजूल भगत के 'टूटा हुआ इंद्रधनुष्य', 'लेडीज क्लब', 'अनारो', 'बेगाने घर मे' 'खातुल' 'तिरछी बौछार' और 'गंजी' आदि सभी उपन्यासों मेंस्त्रि के विविध रूपो के दर्शन होते है। उन्होंने अपने उपन्यासों में आस-पास की घटीत घटनाओं पर लिखाहै जिसमें सामाजिकता की झलक देखने को मिलती है। समाज में अनेक परेशानियाँ होती है। परंपरागत हिंदू समाज में माता-पिता, परिजन तथा परिवार के वरिष्ठ द्वारा विवाह निर्धारित होते थे। परंतु बदलते समय में नवीन विचारधारा पनप रही है। मंजुल भगत के 'गंजी' उपन्यास में शांती की माँ अनारो शांति की शादी मनहर से तय करती है। शादी के पहले उन दोनों का मिलना अनारो को पसंद नहीं है। उसकी गैर मौजूदगी में मनहर शांती के घर उसे मिलने आता रहता है। अनारो अशिक्षित है, कम उम्र में ही उसकी शादी होती है। उसका पती शराबी है। परिवार की कोई भी जिम्मेदारी नही उठाता। अपने संस्कारो से युक्त पत्नी को मारपीट करता है। अनारो अपने निकम्मे पति की मार सहकर भी पति को संपूर्ण आदर देती है।

'तिरछी बौछार' उपन्यासकी विस्मिता अपने मर्जी से जीवन जीना चाहती है। लेकिन उसमें कई बाधाएँ आती हैं। घरेलु महिला के पाव घर की चार दिवारों से बाहर निकलते ही उसकी सोच में भी फर्क आ जाता है। अपने बल पर वह स्वतंत्र अस्तित्व निर्माण करती है। वह पुरानी व्यवस्था को बिना तोडे नई व्यवस्था बनाती है। ऐसा करते समय उस पर समाज ने अनेक बंधन डाले, पर उससे उसने अपने जीवन को नष्ट नही होने दिया।

'गंजी' उपन्यास में शांती अर्थात गंजी स्वतंत्र विचारों वाली लडकी है। उसका बचपन आर्थिक विपन्नावस्था में गुजरा था। वह अपने जीवन में संघर्ष करके जीवन की आर्थिक और सामाजिक पक्षो में सुधार लाती है।

भारतीय समाज में स्त्री पुरुषों के विवाहबाह्य संबंधो के लिए कोई स्थान नही है। मंजुल भगत के 'टूटा हुआ इंद्रधनुष्य' और 'लेडीज क्लब' इन उपन्यासों में स्वच्छंद प्रेम मे जिनेवाली स्त्री दिखाई देती है। 'टूटा हुआ इंद्रधनुष्य' उपन्यास की नायिका शोभना अपने पूर्व प्रेमी मनिष से प्रेम करती है और विवाह अपने मर्जी से अन्य पुरुष से करती है। क्योंकि वह अपने प्रेम को रिश्ते में बांधना नही चाहती। शोभना वैवाहिक जीवन और घर के बंधनो के साथ अपने प्रेम को उन्मुक्त होकर जीती है। वह समाज के प्रतिक्रिया की चिंता नहीं करती। वह परिवार विवाह के बंधनो में बंधकर भी अपने प्रेम और यौन संबंधो के लिए स्वतंत्र है। लेकिन समाज के लिए ये बातें अस्विकृत है। भारतीय समाज में ऐसे नाजायज संबंधों को मान्यता ही नही है।

मनुष्य समाजशील प्राणी है, और वह समाज में रहता है। समाज में ही पलता-फुलता है। वह समाज में इसीलिये रहता है कि उसे अकेलापन पसंद नही। मंजुल भगत के 'टूटा हुआ इंद्रधनुष्य', 'लेडीज क्लब', 'तिरछी बौच्छार' उपन्यासों की नायिकाओं को अकेलेपन की समस्या का सामना करना पडता है।इन उपण्यासों की नायिकाये परिवार मे रहते हुए भी अकेली है .

समाज में विवाह का स्थान महत्वपूर्ण है। अनैतिकता को रोकने का यह एकमात्र उपाय है। लेकिन यही विवाह अगर अनमेल विवाह हुआ तो वैवाहिक असंगतियों के अनेक दुष्परिणाम भुगतने पडते है। अनमेल विवाह के कारण नारी का मानसिक शोषण होता है। आज भी समाज में ऐसी अनेक स्त्रिया हैं जो अनमेल विवाह के कारण कुंठाग्रस्त जीवन यापन कर रही है। अनमेल विवाह के साथ-साथ प्राचीन काल से ही समाज में दहेज प्रथा प्रचलित है। आज 21 वी सदी में भी लडकी का

जन्म एक अभिशाप माना जाता है। इसका कारण दहेज प्रथा है। मंजुल भगत की 'अनारो' दहेज प्रथा को निभाने के लिए ही अपने मालकीनों से पैसे उधार लेती है। 'तिरछी बौछार' में दहेज ना दे सकने के कारण नैना की शादी नही होती।

इस प्रकार मंजुल भगत के लगभग सभी उपन्यासों में समाज में व्याप्त विविध समस्याओं का यथार्थ चित्रण किया है। उन्होंने आधुनिक नारी के जीवन की समस्त समस्याओं को वाणी दी है और कुछ हद तक इन समस्याओं के समाधान भी देने में सफल हुई है।

• नारी मुक्ति के नये आयाम:-

आधुनिक युग व्यक्ति स्वातंत्र्य का युग है| इस युग में नारी भी अपनी स्वतंत्रता के प्रति सजग बनी है। हर क्षेत्र में होनेवाले शोषण के खिलाफ यह संघर्ष कर रही है। वह अपने व्यक्तित्व को विकसित करने में प्रयत्नशील है| नारी मुक्ति के विचारों पर प्रकाश डालनेवाले कतिपय उपन्यास हिंदी में लिखे गये| उदा. अमृतलाल नागर का ‘अग्निगर्भा’ नाच्यो बहुत गोवल, राजकमल चौधरी का - ‘नदी बहती थी।’ शैलेश मटियानी का ‘दो बूँदजल’ निर्मल वर्मा का ‘वे दिन' राजेंद्र यादव का ‘अनदेखे अनजान फूल’ चित्रा मुद्गल का ‘एक जमीन अपनी 'ऑवा’ आदि उल्लेखनीय उपन्यास है।

आज भारत में नारीयों के जीवन में जो असंगतियॉ दिखाई देता है| उसमें पाश्चात्य शिक्षा, पाश्चात्य विचारधारा का प्रभाव परिलक्षित होता है। हिंदी उपन्यासों में ऐसी नारियों का चित्रण प्राप्त होता है। ओ पारिवारिक परिवेश, सामाजिक परिवेश के कारण, असंगत आचरण की शिकार बनी है। नारी जीवन की असंगतियों का बोध निम्नलिखित कुछ उपन्यासों में स्पष्टतः दृष्टिगोचर होता है। राजेंद्र यादव और मन्नू भंडारी का ‘एक इंच मुस्कान’ रमेश व क्षी का ‘बैसाखियोंवाली इमारत’, देवेश ठाकुर का ‘भ्रमभंग’ आदि उपन्यास उल्लेखनीय है।

निष्कर्ष:-

महिला सशक्तिकरण महिलाओं कोयह मजबूती प्रदान करता है, जो उन्हें उनके हक के लिए लड़ने में मदद करता है। हम सभी को महिलाओं का सम्मान करना चाहिए, उन्हें आगे बढ़ने का मौका देना चाहिए। इक्कीसवीं सदी नारी जीवन में सुखद सम्भावनाओं की सदी है। महिलाएँ अब हर क्षेत्र में आगे आने लगी है। आज की नारी अब जाग्रत और सक्रीय हो चुकी है। किसी ने बहुत अच्छी बात कही है नारी जब अपने ऊपर थोपी हुई भेड़ियों एवं कड़ियों को तोड़ने लगेगी, तो विश्व की कोई शक्ति उसे नहीं रोक पाएगी । वर्तमान में नारीने रुढ़िवादी बेड़ियों को तोड़ना शुरू कर दिया है। यह एक सुखद संकेत है। लोगों की सोच बदल रही है, फिर भी इस दिशा में और भी प्रयास करने की आवश्यकता है।

संदर्भ ग्रंथ -

1. प्रेमचंद कथा साहित्य:- समीक्षा और मूल्यांकन - डॉ. त्रिपाठी
2. मंजुल भगत :- समग्र कथा साहित्य भाग-२ कमल किशोर गोयनका
3. मंजुल भगत के कथा साहित्य में नारी:- सुरैया खान